ओ३म्

**‘नारी के पति के प्रति व्रत व कर्तव्य विषयक ईश्वर की वेदाज्ञा’**

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आज का समाज व संसार वैदिक ज्ञान व विज्ञान से कोसों दूर है। वेदों का ज्ञान न होने का अर्थ है कि मनुष्य अविद्या से ग्रस्त है तथा विवेकहीन है। स्वामी दयानन्द ने वेदों का गहन अध्ययन कर घोषित किया था कि **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।** सृष्टि के आदि काल से जैमिनी ऋषि पर्यन्त व स्वामी दयानन्द की वेदों के प्रति एक समान विचार व मान्यतायें रही हैं। आज भी देश में वेदों के अनेक विद्वान हैं और सबकी वेद विषयक ऋषि दयानन्द के बनाये नियम व मान्यता में पूर्ण निष्ठा है। महाभारत काल के बाद आलस्य व प्रमाद के कारण वेदों का अध्ययन अवरुद्ध हो गया था जिससे वेद और इनका यथार्थ ज्ञान विलुप्त होकर संसार में अज्ञान छा गया। इसके परिणामस्वरूप अज्ञान के कारण अन्धविश्वास व मिथ्या मान्यताओं सहित अनेकानेक सामाजिक कुरीतियां का देश व संसार में प्रचलन हुआ। देश में विदेशी आक्रमण होने पर यह अंधविश्वास और अधिक बढ़े। कुछ लोगों, मुख्यतः वेदज्ञान शून्य पण्डितों के, निजी स्वार्थों के कारण भी समाज में अनेक मिथ्या मान्यताओं का प्रचलन हुआ जिसमें मूर्तिपूजा, जन्मना जातिवाद, फलित ज्येोतिष, मृतक श्राद्ध, सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह सहित विधवाओं का भीषण उत्पीड़न किया गया। यहां तक पतन हुआ कि स्त्रियों और शूद्रों के वेदाध्ययन आदि का अधिकार ही छीन लिया गया जिससे समाज में एक प्रमुख वर्ग वेद ज्ञान शून्य ब्राह्मणों व पण्डितों का एकाधिकार हो गया और समाज पतन की ओर बढ़ता रहा। इन्ही कुप्रथाओं में व्रत-उपवास आदि भी सम्मिलित हैं जो जड़़पूजा व अन्य अंधविश्वासों से पोषित परम्परायें हैं।

 वेदों व वैदिक साहित्य में किन्हीं विशेष तिथियों पर भूखे रह कर व्रत व उपवास करने का विधान नहीं पाया जाता। न तो ईश्वर न अन्य कोई ऐसा चेतन व जड़ देवता है जिसे व्रत व उपवास अर्थात् दिन में एक बार भोजन न कर प्रसन्न किया जा सकता हो। व्रत कहते हैं किसी बड़े कार्य को सम्पन्न करने के लिए संकल्प को धारण करने के लिए जिससे वह संकल्प रात दिन हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहे और वह संकल्पित कार्य शीघ्र पूरा हो सके। इसी प्रकार उपवास का अर्थ समीप वास व निवास करना होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, जप, तप व अग्निहोत्र सहित वैदिक विद्वानों का सत्संग आदि स्वयं में ही उपवास हैं। ऐसा करते हुए मनुष्य ईश्वर का समीपस्थ अर्थात् उपवासी होता है। इन साधारण बातों की भी हमारे पौराणिक बन्धु उपेक्षा करते हैं। आजकल अनेक लोग रक्तचाप, मधुमेह, थायराइड आदि अनेक व्याधियों से ग्रस्त हैं। ऐसे में भूखे रहकर उपवास व व्रत करने के परिणाम उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छे नही होते। अतः इस अविद्या को जितना शीघ्र हो सके, प्रत्येक स्त्री-पुरुष व मनुष्य को (मननशील व विचारशील होने के कारण) शीघ्रतम दूर करने का प्रयास करना चाहिये जिसका उपाय सत्यार्थप्रकाश सहित वेदादि ग्रन्थों का अध्ययन ही है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो अनेक जीवन व्यतीत होने पर भी अविद्या, तदाश्रित अन्धविश्वासों एवं अनुचित कृत्यों से बच नहीं सकते।

 सभी प्रकार के व्रत व उपवास जिसमें किसी विशेष प्रार्थना व विषय को सम्मुख रखकर एक समय व दिन भर भूखे रहकर पौराणिक विधि से पूजा पाठ आदि किये जाते हैं, वह अनुष्ठान वैदिक ज्ञान व शास्त्रों के अनुसार कर्तव्य नहीं है। जिस परिणाम व लाभ के लिए इन्हें किया जाता है, उनके इन कृत्यों से मिलने की कोई सम्भावना नहीं रहती। **भारत में सदियों से नाना प्रकार का पौराणिक कर्मकाण्ड होते हुए भी जापान के नागरिकों की औसत आयु 86 वर्ष से ऊपर है जबकि भारत में यह औसत आयु 69 वर्ष से नीचे है। भारत का स्थान विश्व में औसत आयु के टेबल में 145 वां है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हम स्वास्थ्य के मामले में वैदिक धर्म और पौराणिक मान्यताओं का पालन करते हुए भी आयु के औसत में संसार के 144 देशों से पीछे हैं।** इसका एक कारण हमारे यहां कि सामाजिक व आर्थिक विषमता व गरीबों को उचित मात्रा में पौष्टिक भोजन का न मिलना भी है। हमारे वैदिक एवं पौराणिक विद्वानों को इस समस्या पर विचार करना चाहिये। **संसार के दो देश अमेरिका और जापान वह देश हैं जहां क्रमशः 72,000 और 30,000 लोग 100 वर्ष की आयु से अधिक के हैं। भारत में यह संख्या दो से तीन हजार के बीच हो सकती है। संसार का सबसे अधिक आयु का मनुष्य चीन निवासी झोउ योगयांग (Zhou Youguang) है जो 13 जनवरी, 1906 को जन्मा था। इसकी वर्तमान में आयु 110 वर्ष 279 दिन है। भारत की स्थिति हमारे सामने है। कहीं न कहीं भूल व त्रुटियां अवश्य हैं जिन्हें दूर किया जाना चाहिये। यह विवरण हमने पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया है।**

 **नारी को पति को कैसा भोजन कराना चाहिये व इससे जुड़े अनेक महत्वपूर्ण बातों का उपदेश ईश्वर ने यजुर्वेद के आठवें अध्याय के 42 व 43 वें मन्त्र में भी किया हुआ है। यजुर्वेद का 42 वां मन्त्र है ‘आजिघ्र कलशं मह्या त्वा बिशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवत्र्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः।।’ इस मन्त्र का ऋषि दयानन्द जी द्वारा हिन्दी में किया गया पदार्थ इस प्रकार है। पदार्थः-हे (महि) प्रशंसनीय गुणवाली स्त्री ! जो तू (उरुधारा) विद्या और अच्छी अच्छी शिक्षाओं को अत्यन्त धारण करने (प्यस्वती) प्रशंसित अन्न और जल रखने वाली है, वह गृहाश्रम के शुभ कामों में (कलशम्) नवीन घट का (आजिघ्र) आघ्राण कर अर्थात् उस को जल से पूर्ण कर उस की उत्तम सुगन्धि को प्राप्त हो (पुनः) फिर (त्वा) तुझे (सहस्रम्) असंख्यात (इन्दवः) सोम आदि ओषधियों के रस (आविशन्तु) प्राप्त हों जिस से तू दुःख से (निवर्तस्व) दूर रहे अर्थात् कभी तुझ को दुःख न प्राप्त हो। तू (ऊर्जा) पराक्रम से (नः) हम को (धुस्व) परिपूर्ण कर (पुनः) पीछे (मा) मुझे (रयिः) धन (आविशतात्) प्राप्त हो। इस मन्त्र का भावार्थ है--विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिस से बुद्धि बल और विद्या की वृद्धि हो और धानदि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें। यजुर्वेद के अगले 8/43 मन्त्र का भावार्थ इस प्रकार है-‘जो विद्वानों से शिक्षा पाई हुई स्त्री हो वह अपने अपने पति और अन्य सब स्त्रियों को यथायोग्य उत्तम कम्र्म सिखलावें जिससे (उनके पति व समाज की स्त्रियां) किसी तरह के अधम्र्म की ओर न डिगें। वे दोनों स्त्री पुरुष विद्या की वृद्धि और बालाकों तथा कन्याओं को शिक्षा किया करें।’**

 ऋषि दयानन्द जी के उपर्युक्त मन्त्रार्थ के प्रकाश में हम पौराणिक बन्धुओं से यह कहना चाहते हैं कि उन्हें शरीर शास्त्री चिकित्सों व वेद विदुषी स्त्रियों से अपने व अपने परिवार के भोजन आदि का जानकारी व ज्ञान प्राप्त करना चाहिये और भिन्न-भिन्न तिथियों व पर्वों पर व्रत व उपवासों से बचना चाहिये। ईश्वर एक है और उसकी पूजा व उपासना कहीं बाहर जाकर करने की आवश्यकता नहीं है अपितु घर पर ही सन्ध्या व यज्ञ करके सम्पन्न की जा सकती है। यही ईश्वर व हमारे प्राचीन ऋषियों का विधान है। इसकी विधि के लिए आर्यसमाज से सन्ध्या व अग्निहोत्र यज्ञ की पुस्तक प्राप्त की जा सकती है और अपने जीवन को स्वास्थ्य के नियमों व ईश्वरोपासना करते हुए सुखी, सम्पन्न, समृद्ध और दीर्घायु बनाया जा सकता है। हमने यह विचार सामाजिक हित की भावना से प्रस्तुत किये हैं। आशा है कि पाठक इसे पसन्द करेंगे और अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत करायेंगे।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘बलिवैश्वदेव महायज्ञ के उद्देश्य, विधि एवं होने वाले लाभों पर विचार’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यों के पांच महायज्ञों में एक महायज्ञ **‘बलिवैश्वदेव यज्ञ’** भी है जिसका विधान मनुस्मृति के श्लोक 3/84 में उपलब्ध होता है। श्लोक है **‘वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्येऽग्नौ विधिपूर्वकम्। आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम्।।’** ऋषि दयानन्द सरस्वती जी इस श्लोक को पंचमहायज्ञ विधि में प्रस्तुत कर इसका अर्थ करते हुए कहते हैं कि अब चैथे बलिवैश्वदेव (यज्ञ) की विधि लिखी जाती है। जब भोजन सिद्ध हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़कर घृतमिष्टयुक्त अन्न जो कुछ पाकशाला में सिद्ध हो, उसको दिव्यगुणों के अर्थ पाकाग्नि में विधिपूर्वक नित्य होम करें। इसके बाद उन्होंने बलिवैश्वदेव यज्ञ करने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुए अर्थवेद काण्ड 19/55/7 तथा यजुर्वेद के 19/39 मन्त्रों को प्रस्तुत कर उनके भाषार्थ दिये हैं। हम यहां इन दोनों मंत्रों के ऋषिकृत भाषार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। इन मन्त्रों का उनका भाषार्थ है--हे परमेश्वर ! आपकी आज्ञा से नित्यप्रति बलिवैश्वदेव कर्म करते हुए हम लोग चक्रवर्तिराज्यलक्ष्मी, घृतदुग्धादि पुष्टिकारक पदार्थों की प्राप्ति और सम्यक् शुद्ध इच्छा से नित्य आनन्द में रहें तथा माता, पिता व आचार्य आदि की उत्तम पदार्थों से नित्य प्रीतिपूर्वक सेवा करते रहें। जैसे घोड़े के सामने बहुत से खाने वा पीने के पदार्थ धर दिये जाते हैं, वैसे सब की सेवा के लिए बहुत से उत्तम-उत्तम पदार्थ देवें जिनसे वे प्रसन्न हो के हम पर नित्य प्रसन्न रहें। हे परमगुरु अग्नि परमेश्वर ! आप और आपकी आज्ञा से विरुद्ध व्यवहारों में हम लोग कभी प्रवेश न करें, और अन्याय से किसी प्राणी को पीड़ा न पहुंचावें, किन्तु सब को अपना मित्र और अपने को सब का मित्र समझ के परस्पर उपकार करते रहें। यजुर्वेद मन्त्र का भाषार्थ इस प्रकार है- हे जातवेद परमेश्वर ! आप सब प्रकार से मुझ को पवित्र करें। जिन (वेदभक्तों) का चित्त आप में है, तथा जो आपकी आज्ञा पालते हैं, वे विद्वान् श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष भी विद्यादान से मुझ को पवित्र करें। उसी प्रकार आपका दिया जो विशेष ज्ञान (वेद ज्ञान व ऋषि-मुनियों के बनाये वेदादि शास्त्र) व आपके विषय (ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव व स्वरुप विषयक ज्ञान) के ध्यान से हमारी बुद्धि पवित्र हो और संसार के सब जीव आपकी कृपा से पवित्र और आनन्दयुक्त हों।

 वेद और मनुस्मृति से बलिवैश्वदेव यज्ञ का विधान व यज्ञकत्र्ता को होने वाले लाभों को सूचित करने के बाद ऋषि दयानन्द जी ने इस यज्ञ की 10 आहुतियों के मन्त्र दिये हैं। यह आर्य परिवारों में सर्वत्र प्रचलित हैं तथापि हम इन्हें महत्वूपर्ण जानकर इनका यह उल्लेख कर रहे हैं। बलिवैश्वदेवयज्ञ की 10 होमाहुति के मंत्र = **ओमग्नये स्वाहा।।1।। ओं सोमाय स्वाहा।।2।। ओमग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।।3।। ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।4।। ओं धन्वन्तरये स्वाहा।।5।। ओं कुह्वै स्वाहा।।6।। ओमनुमत्यै स्वाहा।।7।। ओं प्रजापतये स्वाहा।।8।। ओं सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।।9।। ओं स्विष्टकृते स्वाहा।।10।।** ऋषि द्वारा किये इन मन्त्रों के भाषार्थ इस प्रकार हैं-अग्नि शब्द के अर्थ ज्ञानस्वरुप प्रकाशस्वरुप सब सुखों के देने वाले परमेश्वर आदि हैं। जो सब पदार्थों को उत्पन्न और पुष्ट करने से सुख देनेहारा है उसको **‘सोम’** कहते हैं। जो प्राण सब प्राणियों के जीवन का हेतु और अपान अर्थात् दुःख के नाश का हेतु है, इन दोनों को **‘अग्नीषोम’** कहते हैं। यहां संसार का प्रकाश करने वाले ईश्वर के गुण अथवा विद्वान लोगों का **‘विश्वदेव’** शब्द से ग्रहण होता है। जो जन्ममरणादि रोगों का नाश करनेहारा परमात्मा है वह **‘धन्वन्तरि’** कहाता है। जो अमावास्येष्टि का करना है, जो पौर्णमास्येष्टि वा सर्वशास्त्रप्रतिपादित परमेश्वर की चिति शक्ति है, यहां उसका ग्रहण है। जो सब जगत् का स्वामी जगदीश्वर है, वह **‘प्रजापति’** कहाता है। ईश्वर से उत्पादित अग्नि और पृथिवी की पुष्टि करने के लिए जो इष्ट सुख करनेहारा परमेश्वर है, वही **‘स्विष्टकृत्’** कहाता है। ये दश अर्थ दश मन्त्रों के हैं।

 ऋषि दयानन्द जी ने दस होमाहुतियों के बाद बलिदान के मन्त्र लिखे हैं। यह मन्त्र हैं- **ओं सानुगायेन्द्राय नमः।। ओं सानुगाय यमाय नमः।। ओं सानुगाय वरुणाय नमः।। ओं सानुगाय सोमाय नमः।। ओं मरुद्भ्यो नमः।। ओम् अद्भ्यो नमः।। ओं वनस्पतिभ्यो नमः।। ओं श्रियै नमः।। ओं भद्रकाल्यै नमः।। ओं ब्रह्मपतये नमः।। ओं वास्तुपतये नमः।। ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।। ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः।। ओं नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः।। ओं सर्वात्मभूतये नमः।। ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।। ।।1-16।।** इन 16 मन्त्रों का ऋषिकृत भाषार्थ है- जो सर्वैश्वर्ययुक्त परमेश्वर और जो उसके गुण हैं, वे **‘सानुग इन्द्र’** शब्द से ग्रहण होते हैं, जो सत्य न्याय करने वाला इ्र्रश्वर और उसकी सृष्टि में सत्य न्याय के करने वाले सभासद् हैं, वे **‘सानुग यम’** शब्दार्थ से ग्रहण होते हैं। जो सब से उत्तम परमात्मा और उसके धार्मिक भक्त हैं, वे **‘सानुग वरुण’** शब्दार्थ से जानने चाहिएं। पुण्यात्माओं को आनन्दित करने वाला और जो पुण्यात्मा लोग हैं, वे **‘सानुग सोम’** शब्द से ग्रहण किये हैं। जो प्राण अर्थात् जिनके रहने से जीवन और निकलने से मरण होता है, उनको **‘मरुत्’** कहते हैं। इनकी रक्षा अवश्य करनी चाहिए। जिनसे वर्षा अधिक होती और जिनके फलादि से जगत् का उपकार होता है, उसकी भी रक्षा करनी योग्य है। जो सब के सेवा करने योग्य परमात्मा है, उसकी सेवा से राज्यश्री की प्राप्ति के लिए सदा उद्योग करना चाहिए। जो कल्याण करने वाली परमात्मा की शक्ति अर्थात् सामर्थ्य है, उसका सदा आश्रय करना चाहिए। जो वेद का स्वामी ईश्वर है, उसकी प्रार्थना और उद्योग विद्या प्रचार के लिए अवश्य करना चाहिए। जो वास्तुपति गृहसम्बन्धी पदार्थों का पालन करनेहारा मनुष्य अथवा ईश्वर है, इनका सहाय सर्वत्र होना चाहिए। जो दिन में विचरने वाले प्रणियों से उपकार लेना और उनको सुख देना है, सो मनुष्य जाति का ही काम है। जो रात्रि में विचरने वाले प्राणी हैं, उनसे भी उपकार लेना और जो उनको सुख देना है, इसलिए यह प्रयोग है। सब में व्याप्त परमेश्वर की सत्ता को सदा ध्यान में रखना चाहिए। माता, पिता, आचार्य, अतिथि, पुत्र, भृत्यादिकों को भोजन कराके पश्चात् गृहस्थ को भोजनादि करना चाहिये। नमः शब्द का अर्थ यह है कि आप अभिमान रहित होके दूसरे का मान्य करना।।1-16।।

 बलिवैश्वदेव यज्ञ का अन्तिम विधान करते हुए ऋषि दयानन्द जी ने **‘शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्। वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेेद् भुवि।।’** को प्रस्तुत कर लिखा है कि बलिदान के 16 मन्त्रों के बाद छः भागों को लिखते हैं। इस श्लोक का भाषार्थ करते हुए ऋषि लिखते हैं कि कुत्तों, कंगालों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिए छः भाग अलग-अलग बांट के दे देना और उनकी प्रसन्नता सदा करना। अन्तिम वाक्य ऋषि लिखते हैं **‘यह वेद और मनुस्मृति की राति से बलिवैश्वदेव की विधि लिखी।’** इसके साथ ही बलिवैश्वदेव यज्ञ समाप्त हो जाता है।

 ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति के श्लोक के अनुसार रसोई घर में बने घृतमिष्टान्न युक्त अन्न को पाकाग्नि में नित्य होम करने का विधान किया है। ऋषि दयानन्द के समय एवं उनसे पूर्व कालों में आजकल की तरह रसोई गैस एल.पी.जी. का प्रचलन नहीं हुआ था। आजकल पूर्व कालों के चूल्हों का स्थान इस रसोई गैसे वाले चूल्हें ने ले लिया है जिसमें घृतमिष्टान्न की आहुति देना व्यवहारिक नहीं है। इसका एक कारण गैस के जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध से होने वाला प्रदुषण और दूसरा चूल्हें में आहुति देने से चुल्हें को होने वाली हानि है। अतः पाकाग्नि के अभाव में गृहस्थी बलिवैश्वदेव यज्ञ की आहुतियां दैनिक अग्निहोत्र के हवनकुण्ड में ही देते हैं जिसे देश, काल और परिस्थिति के अनुरुप कहा जा सकता है।

 पंच महायज्ञों में इतर 4 यज्ञों में ब्रह्म, जड़ देवताओं, विद्वानों, माता-पिता, वृद्धों एवं आचार्यों का पूजन, उपासना व सत्कार आदि होता है। संसार के अन्य प्राणियों को भी यज्ञ का लाभ मिले तभी यज्ञ = श्रेष्ठतम कर्म सिद्ध व पूर्ण होगा। एतदर्थ ही बलिवैश्वदेव यज्ञ का विधान किया गया है जिससे मनुष्यतेर व जड़ देवों के अतिरिक्त सभी भूत-प्राणियों का सत्कार हो। इस प्रकार पंचमहायज्ञों से सभी जड़ चेतन देवताओं व प्राणियों को लाभ पहुंच जाता हैं। इसमें विद्वानों द्वारा एक युक्ति यह भी दी जाती है कि जीवात्मा अमर व अविनाशी होने के कारण ईश्वर की कृपा व व्यवस्था से शरीर रूपी वस्त्र को बदलते हुए पुनर्जन्म हो प्राप्त होता रहता है। कभी यह मनुष्य तथा कभी अन्य प्राणी योनियों में कर्मानुसार जन्म पाता है। बलिवैश्वदेव यज्ञ का विधान इस लिये बनाया गया है कि हम भविष्य में जब कभी किसी भी योनि में उत्पन्न क्यों न हों, हमें व अन्य सभी जीवात्माओं वा प्राणियों को इस यज्ञ के द्वारा पोषण प्राप्त होता रहे। अतः इस यज्ञ का सभी मनुष्यों द्वारा किया जाना युक्तिसंगत है। बलिवैश्वदेव यज्ञ का विवरण पढ़ने व उस पर विचार करने से यह विदित होता है कि इसका करना कर्मफल विधान के अनुसार सभी यज्ञकर्ताओं के लिए लाभकारी अवश्य होता है। आईये ! बलिवैश्वदेव यज्ञ की भावना को जानकर इस यज्ञ का नित्य सम्पादन करने का व्रत लें। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**